"Dead Sea Scroll" on Stone?

Does Ancient Stone Predict a Risen Messiah?

''मृत सागर के अभिलेख'' पत्थर पर

क्या प्राचीन पत्थर जी उठने वाले मसायाह के विषय में भविष्यवाणी करता है?

इण्डियाना जोन्स, परे हटो। यीशु के जन्म से कुछ दशकों पूर्व के समय का एक प्राचीन इब्रानी पत्थर अचानक से पुरातत्व विज्ञान शास्त्रियों के मध्य गरमागरम चर्चा का विषय बन चुका है। तीन फुट ऊँचे पत्थर पर इब्रानी भाषा के शब्दों की 87 पंक्तियाँ लिखी हुई हैं, जिनमे से कुछ एक ऐसे मसायाह की ओर संकेत करतीं हैं जो मृत्यु को प्राप्त होगा और तीन दिन के बाद फिर से जीं उठेगा। पत्थर के ऊपर लिखे शीर्षक ''गैब्रीएल का प्रकाशित वाक्य'' को एक विशेषज्ञ द्वारा ''मृत सागर के अभिलेख पत्थर पर'' के रूप में दूसरे ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

विद्वान लोग पत्थर के समय काल और विश्वसनीयता की जाँच परख की ऊबाऊ प्रक्रिया शुरू कर चुके हैं। बीते हुए समय में कुछ विद्वान और साजिश भरे सिद्धान्तों के रचियता छलांग मारकर ऐसे निष्कर्षों पर जा पहुँचे हैं जो यह पाते हैं जैसे कि ''जेम्स ऑसुएरी'' और ''जीसस फैमिली टूम्ब (यीशु के परिवार की समाधि)'' विश्वसनीय थे, बाद में मात्र यह खोजा जा सका किवे छद्म साहित्य थे या सन्देहास्पद ऐतिहासिक महत्व वाले थे। (देखें, ''द जीसस फैमिली टूम्ब'')

इन बातों के परे कोई भी विद्वान यह तर्क नहीं कर रहा है कि पत्थर अविश्वसनीय है। यूवेल गोरेन्, टेल एविव विश्वविद्यालय में पुरातत्व विज्ञान के एक प्रोफेसर जिन्होंने पत्थर से सम्बन्धित अपने रासायनिक परीक्षण की जाँचें गहराई से समालोचना करने वाले समाचार पत्र को सौंप दी हैं, पूर्वानुमान लगाते हैं कि पत्थर विश्वसनीय है।[1] यदि सिद्ध की गयीं बातें विश्वसनीय होने को होतीं तो पत्थर वास्तव में यीशु के पुनरूत्थान की ऐतिहासिक बनावट पर प्रकाश डालने वाला हो सकता था।

क्या यीशु के समयकाल के दौरान यहूदियों के मध्य कोई ऐसा विश्वास था कि मसायाह मृत्यु को प्राप्त होगा और मृतकों में से तीन दिन पश्चात् जीं उठेगा? यदि ऐसा था तो कैसे यह भविष्यवाणी की बात मसायाह के विषय में की गयी दूसरी अन्य इब्रानी भविष्यवाणियों से भिन्न हो सकती है? मसीही लोग यीशु द्वारा इन प्राचीन भविष्यवाणियों के पूरा किये जाने को उसके मसायाह होने के प्रमाण के रूप में इंगित करते हैं। ख्देखें, ''वॉज़ जीसस द मैसिय्याह? (क्या यीशु मसायाह थे?),

परन्तु प्रमाणों के आधार पर विश्वास करने वाले लोग तर्क करते हैं कि यहूदियों को एक ऐसे मसायाह के होने की आशाएं थीं जो मृत्यु को प्राप्त होगा और पुनः जीं उठेगा और इस बात

ने यीशु और उसके चेलों को संभवतः उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान की कथा को जन्म देने का लक्ष्य प्रदान किया होगा। वास्तव में कुछ गैर–मसीही विद्वान लोग तो ऐसी आशा रखते हैं कि वह पत्थर दरअसल यीशु के पुनरूत्थान का एक मज़ाक के तौर पर भण्डाफोड़ करेगा।

यरूशलेम में हिब्रू विश्वविद्यालय में बाइबिल सम्बन्धी अध्ययन के एक प्रोफेसर इस्राएल नोहल, एक अभियोग की अगुवाई यह साबित करने के लिये कर रहे हैं कि यीशु एक जाली मसायाह थे। नॉल सन्दर्भ की 80वीं पंक्ति का अनुवाद ''पीड़ा भोग रहा मसायाह जो मृतकों में से जीं उठेगा''[2] के विषय में भविष्यवाणी समान करते हैं। अतः नोहल के अनुसार, जीं उठने वाले मसायाह की परिकल्पना मसीही विचारधारा के लिये अनूठी साबित न होगी।

बार्कले स्थित कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय में तालमुदिक सभ्यता (यहूदियों का कानून एवं सन्तों के चरित्र संग्रह) के प्रोफेसर डैनियल बोयारिन ने कहा है कि वह पत्थर उन प्रमाणों की एक उन्नतिशील काया का एक अंग था जो सुझाव दे रहे हैं कि यीशु को उसके दिनों के यहूदी इतिहास के नज़दीकी अध्ययन द्वारा श्रेष्ठतम् रीति से समझा जा सकता है।

कुछ मसीहियों को इससे आघात पहुँचेगा– उनके ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान के अनूठेपन के लिये एक चुनौती [3] जबकि दूसरों को यहूदी धर्म का एक पारम्परिक अंग होने के नाते इस प्रकार के विचार द्वारा सन्तुष्टि मिलेगी।'' उन्होंने ऐसा कहा [4]

परन्तु इससे पूर्व की हम मूल्यांकन करे कि क्या वह पत्थर इस मसीही दावे कि यीशु मृतकों में से जीं उठे पर कोई प्रकाश डालता है अथवा नहीं, आइये हम उन तथ्यों पर दृष्टि डालें जो इस प्राचीन खोज से सम्बन्धित हैं।

तथ्यों की जाँच करना

1. वह पत्थर दस वर्ष पूर्व यरदन में खोजा गया।
2. एक इस्राएल–स्विटज़रलैण्ड वासी संग्रहकर्त्ता जिसने इसे अपने ज्यूरिक स्थित घर में रखा हुआ था उसने इसे यरदनवासी प्राचीन कालीन पुरावशेष के व्यापारी से ख़रीदा था।
3. इस पर स्याही से इब्रानी शब्दों में लिखी हुई 87 पंक्तियाँ दो स्पष्ट स्तम्भों में अंकित थीं।
4. विशेषज्ञों ने इस पत्थर का समय काल प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व निर्धारित किया, मसीह से दशकों पूर्व।
5. एक वर्ष पूर्व दो इस्राएली विद्वानों ने इस पत्थर की छानबीन प्रकाशित की।
6. पत्थर टूटा हुआ है और इसकी कुछ स्याही मिट चुकी है जो इसे पढ़ने के लिये कठिनता उत्पन्न करती है।

7. सन्देश का अनुवाद ''ग्रैबीएल का प्रकाशित वाक्य'' किया जा चुका है और अनायास ही यह पुराने नियम के इब्रानी भविष्यद्वक्ताओं दानिय्येल, जकर्याह, हाग्गै की लेखनियों की ओर ध्यानाकर्षण करता है।
8. 80वीं पंक्ति आरम्भ होती है, ''तीन दिनों में'' परन्तु अगला रोमांचकारी शब्द पढ़ने में कठिन है।

एक पथरीली समस्या

यद्यपि नोहल विश्वास करते हैं कि सन्देश का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक मूल्य है परन्तु वास्तव में संदेश क्या बताता है यह सन्देहयुक्त है। नोहल तर्क देते हैं कि 80वीं पंक्ति में लिखे सन्देश को यूं पढ़ा जाना चाहिये, ''मैं गैब्रीएल, तुम्हें आज्ञा देता हूँ, तीन दिनों में तुम जी उठोगे।'' उनका विश्वास है कि यह सन्देश बगावत का झंडा लहराने वाले ''शिमोन'' नामक व्यक्ति की ओर संकेत करता है जिसे हेरोदेस की सेना द्वारा बर्बरतापूर्वक मौत के घाट उतारा गया था।

कुछ भी हो, इब्रानी भाषा विद्वान, मोशे बार–आशेर, बयान करते हैं :

''एक समस्या है : गद्यांश के रोमांचकारी स्थानों पर पदों की कमी है। मैं प्राचीन मसीही युग से उनकी कुंजियां ढूँढने की नोहल की मानसिकता को समझता हूँ, परन्तु गद्यांश की दो से लेकर तीन रोमांचकारी पंक्तियों में बहुत से शब्द मिटे हुए हैं।''[5]

दूसरे शब्दों में, इब्रानी शब्दों का अनुवाद करना अत्यधिक कठिन कार्य है, और काफी हद तक कर्त्ता के निजी दृष्टिकोण पर आधारित है न कि वास्तविकता पर और कर्त्ता का निजी दृष्टिकोण साजिश भरे सिद्धान्तों की रचना करने वालों के लिये चारे के समान है। इतिहासकार पॉल जॉनसन लिखते हैं :

''दुर्भाग्य से, इतिहासकार निष्पक्षता को लेकर उतने ही सीमित हैं जितना कि वे दिखने की इच्छा रखते हैं। बाइबिल का इतिहास, जो मसीहियों, यहूदियों और अनीश्वरवादियों के लिये समान रूप से ऐसे मतों और पूर्वाग्रहों से युक्त है जो हमारी उत्पत्ति की गहरी जड़ों से होकर गुज़रते हैं और जो कि एक ऐसी जगह है जहाँ निष्पक्षता विशेष रूप से कठिन है, यदि इस तक पहुँच पाना लगभग असम्भव नहीं है।''[6]

तब पर भी, यदि पत्थर विश्वसनीय सिद्ध हो जाये, और इसके द्वारा सन्देश का अनुवाद सही हो, तब यह ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण हो जायेगा, परन्तु क्या पत्थर का सन्देश उनके इस अनुमान को किसी भी रीति से वैध सिद्ध कर पायेगा कि यीशु के पुनरूत्थान की कहानी मनगढ़ंत थी?

वह निश्चित रूप से खींचतान कर लम्बी करने वाली बात होगी। वास्तव में, इस सिद्धान्त के साथ कुछ वृहद् समस्याएं हैं :

1. यीशु के वंश, जीवन, मृत्यु, दफनाया जाना और पुनरूत्थान से सम्बन्धित जानकारियां पुराने नियम की सैकड़ों भविष्यवाणियों में संग्रहीत हैं। वे अथवा उनका पूरा होना किस रीति से साज़िश के तहत हो सकती हैं? ख्देखें ''वॉज जीसस एन इम्पोस्टर?'' (''क्या यीशु ढोंगी थे?''),

2. यीशु कैसे अपने रोमी और यहूदी शत्रुओं के सामने अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान की योजना तैयार कर सकते थे? यीशु के पुनरूत्थान के विरोधी प्रमाणों के तौर पर अनूठी रीति से चुप्पी साधे हैं, क्यों? ख्देखें ''डिड जीसस राइज़ फ्रॉम द डैड?'' (क्या यीशु मृतकों में से जी उठे थे?),

3. प्रथम शताब्दी में यीशु के शत्रुओं ने उस मसायाह के सन्देश का वर्णन उसके पुनरूत्थान के विरोध में प्रमाण के तौर पर क्यों नहीं किया जो मृत्यु को प्राप्त होगा और पुनः जी उठेगा?

4. यदि प्रथम शताब्दी के यहूदी एक ऐसे मसायाह की प्रतीक्षा कर रहे थे जो मृत्यु को प्राप्त होगा और पुनः जी उठेगा तो यहूदी इतिहासकारों जैसे कि जोजफ्स ने इस महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य को अपनी लेखनियों में शामिल क्यों नहीं किया?

5. यीशु के चेलों ने इच्छा पूर्वक अपने जीवनों की आहुति एक मज़ाक को चिरस्थायी बनाये रखने के लिये क्यों दी होगी, यदि यीशु वास्तव में मृतकों में से नहीं जी उठे थे? उन्हें ऐसा झूठ बोलकर कौन सा लाभ प्राप्त करना था?

जबकि पत्थर पर के सन्देश का विश्लेषण हो रहा है और इसका गूढ़ अर्थ विशेषज्ञों द्वारा निकाला जा रहा है तो ये और दूसरे अन्य प्रश्न असंख्य वाद–विवादों का विषय बन रहे होंगे। ''गैब्रीएल के प्रकाशितवाक्य'' के ऐतिहासिक मूल्य की वास्तविकता को जानने के पश्चात् इसके समक्ष सारे प्रमाणों को तौलने के लिये वर्षों लगेंगे।

किसी भी दशा में, यीशु मसीह के पुनरूत्थान का मुद्दा उन लोगों के लिये जो इसकी विश्वसनीयता को अप्रमाणित करने का प्रयास कर रहे होंगें, एक ऐसा लक्ष्य होगा जो समझ के परे है। प्रमाणों को आधार मानकर विश्वास करने वाले एक व्यक्ति ने जिसने मसीह के पुनरूत्थान के विषय में अपनी निजी जाँच–पड़ताल आरम्भ की, अपनी खोजबीन का वर्णन एक पुस्तक के रूप में लिखकर इसको गलत सिद्ध करने की घोषणा की। उसके अनुमान चौंका देने वाले थे। यह देखने के लिये कि उसने क्या खोजबीन की, देखें ''डिड जीसस राइज़ फ्रॉम द डैड (क्या यीशु मृतकों में से जी उठे थे?)''

अनुसूची

1. ईथन ब्रॉनर, न्यूयॉर्क टाइम्स, 6 जुलाई, 2008, 1
2. आईबिड।
3. आईबिड।
4. आईबिड।
5. बिड।
6. पॉल जॉनसन, ए हिस्ट्री ऑफ द ज्यूज़ (लंदन : हार्पर एवं रो, 1988), 6